हम बादलोंके घरमें

रिमली भट्टाचार्य

किन्शी जाते बादल और सड़क

आज सवेरे से बादल कुछ ज़्यादा ही थे। बारिश होने की उम्मीद थी। पर, यह सोहरा* या माओसिनरैम** तो नहीं जहाँ कभी दुनिया में सबसे ज़्यादा बारिश होती थी! किन्शी में एमीके की मेई (खासी भाषा में माँ) और मेसान (मौसी) घबरा रही थीं। कल फुटबॉल मैच में किन्शी की टीम जीत तो गई लेकिन गोलकीपर भैया की जर्सी, निकर वगैरह कीचड़ में बिलकुल लथपथ हो गए थे। तो चलते हैं, छोटी-सी पहाड़ी नदी की ओर....

साबुन घिसो, कपड़ों को छपछपाओ, खँगालो! और काले चमकीले पत्थरों पर बिछा दो...

शिलॉन्ग से किन्शी जाते हुए हम यहाँ रुके। बरामदे में परिवार के लोग और ऊपर लटकते पके हुए भुट्टे।

बादलों का घर यानी मेघालय

माओसिनरैम की हरियाली के बीच लेखिका और किरशन बोरलांग

फिर एमीके भागी सड़क के उस पार खाने की दुकान की ओर। आज स्कूल की छुट्टी। न जाने आज कौन आएगा? कहाँ से आएगा...? पाइन की लकड़ी जलाई.. चूल्हा तैयार किया। चावल साफ किए और देगची चढ़ा दी। माई बाँस का अचार निकाल रही है और मेसान माँस पका रही है। गिलास को सूखे कपड़े से चमकाया...। वाह! आ गए मेहमान। दूर-दूर तक सफर करने वाले लोग जा रहे थे कैलांग पहाड़ ... उन्हें खाना तो चाहिए ही, गाना भी तो चाहिए!

आग में माँस को धुआँ देती एमीके की माँ। उन्होंने पारम्परिक वस्त्र - जेनसेम - पहन रखा है।

किन्शी में अपनी माँ को खाना पकाने में मदद करती एमीके। सुपारी (खासी में गवई) चबाने से उसके होंठ कितने रंग चुके हैं।

एक चश्मे वाली दीदी ने पूछा, "एमीके, क्या तुम यह गाना जानती हो? हमने बचपन में इसे सीखा था..."

को सिम बारिट इया थुह न्गा
कुमनो फी इम बारोह शिरटा

किन्शी में सब मिलकर गाना गाते हुए..

एमीके काम में तो बड़ी तेज़ है पर, अजनबियों से ज़रा शर्माती है। फिर भी वह एक दो पँक्तियाँ गाती है।

इतने में पता नहीं कहाँ से इतने सारे बच्चे और बड़े आ जुटे। सफर करने वाली दीदी लोगों के साथ-साथ सब गाने लगे...

को सिम बारिट इया थुह न्गा
कुमनो फी इम बारोह शिरटा
ही सॉ अइओम हाबा रंग ने स्लाप
फी क्मेन ने जॉ उमम्ट
को सिम बारिट इया थुह न्गा
ही सॉ अइओम हाबा रंग ने स्लाप
बैन रवाइ इरोह हा कि सॉ अइओम
इयू बली नॉन्गथॉ जुनोम

ओ, नन्हे पंछी बताओ तो मुझे
कैसे गुज़ारते हो तुम अपना जीवन
चारों मौसमों से, बारिश और धूप से
तुम खुश हो या कि दुख से भरे लेकिन
सारे मौसमों में गाते हो यूँ ही
प्रशंसा के गीत उनके
जिन्होंने बनाई है
यह दुनिया।

*सोहराः खासी भाषा में चेरापूँजी को सोहरा कहा जाता है। कुछ समय पहले तक दुनिया भर में सबसे ज़्यादा बारिश चेरापूँजी में ही होती थी।
**माओसिनरैमः अब इस जगह पर सबसे ज़्यादा बारिश होती है।

फोटोः पदमाक्षी पटवारी और किरशन बोरलांग